जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

दानी से त्यागी सदा ही महान होता है; क्योंकि त्याग धर्म है और दान पुण्य।

– धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ-129

वर्ष : 26, अंक : 12
सितम्बर (द्वितीय) 2003

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पूरे देश में पर्यूषण पर्व धूम-धाम से मनाया गया

1. **जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) :** यहाँ पर्व के अवसर पर दिनांक 31 अगस्त से 9 सितम्बर तक प्रतिदिन टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के ही प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ सभी को मिला।

प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् विदुषी ब्र. कल्पना बेन सागर द्वारा प्रवचनसार की 80वीं गाथा और दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर मार्मिक प्रवचन हुए । साथ ही पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री द्वारा छहढाला की कक्षा चलाई गई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं महाविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रवचन हुये। प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रातः बापूनगर महिला मण्डल की ओर से दशलक्षण विधान का भी आयोजन किया गया।

विधि-विधान के कार्य पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा एवं उपाध्याय वरिष्ठ के विद्यार्थियों द्वारा सम्पन्न हुये। समस्त कार्यक्रम पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

ज्ञातव्य है कि अन्तिम दिन प्रात: डॉ. भारिल्ल का उत्तम ब्रह्मचर्य विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुआ; जिसमें **महामहिम श्री निर्मलचन्दजी जैन, राज्यपाल, राजस्थान** भी पधारे। इसके पूर्व उन्होंने सीमन्धर जिनालय में पूजन की। तथा डॉ. भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त उन्होंने अपने करकमलों से प्रश्न मंच के पुरस्कार प्रदान किये।

2. **जयपुर (आदर्शनगर) :** यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: मार्मिक एवं सारगर्भित प्रवचनों का लाभ उपस्थित समाज ने लिया। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन प्रश्न-मंच हुआ। आपके हृदयस्पर्शी प्रवचनों के पूर्व पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री, शाहगढ के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये तथा रात्रि में पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर के सोलह कारण भावनाओं पर प्रवचन हुये।

3. **जयपुर (राजस्थान जैन सभा) :** मनिहारों के रास्ते स्थित श्री दि. जैन बड़े दीवानजी के मंदिर में राजस्थान जैनसभा के तत्त्वावधान में रात्रि में प्रतिदिन दशलक्षणधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। प्रवचन के पश्चात् प्रतिदिन प्रश्नमंच भी किया गया। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित साहित्य एवं प्रवचन के अनेक कैसेट्स बिके। साथ ही वीतराग-विज्ञान (मासिक) एवं जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) के अनेक सदस्य भी बनें।

ज्ञातव्य है कि दिगम्बर पर्यूषण के पूर्व श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर अध्यात्म स्टडी सर्किल मुम्बई में डॉ. भारिल्ल के विभिन्न विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुए। जिसका अनेक लोगों ने लाभ लिया।

इसके अतिरिक्त जयपुर के उपनगरों में 4. **तेरापंथियान बड़ा मन्दिर** – पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री छतरपुर, 5. **मालवीय नगर ह्न** पण्डित विनयचन्दजी पापडीवाल, 6. **जनता कॉलोनी ह्न** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, 7. **सांगानेर ह्न** पण्डित चिरंजीलाल जैन, 8. **मानसरोवर ह्न** पण्डित गंभीरमलजी सोनी, 9. **दीवान भदीचंदजी मन्दिर ह्न** पण्डित संतोषकुमारजी झाँझरी/पण्डित प्रियंकरजी, 10. **बरकतनगर ह्न** विदुषी प्रेमलताजी, 11. **महावीर स्कूल ह्न** पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, 12. **महावीर नगरह्न** पण्डित अमोलजी संघई, 13. **जनकपुरी ह्न** पण्डित जीवनजी शास्त्री घुवारा, 14. **खजांची की नसियाँ ह्न** श्री ताराचन्दजी सौगानी, 15. **चित्रकूट कॉलोनी ह्न** श्रीमती अल्काजी सेठी, 16. **झोटवाड़ा ह्न** पण्डित माणकचन्दजी पहाड़िया, 17. **मानसरोवर मीरा मार्ग ह्न** डॉ. प्रभाकरजी सेठी, 18. **मुशरफान मन्दिर ह्न** श्रीमती प्रभाजी जैन, 19. **बापूनगर (पार्श्वनाथ चैत्यालय) ह्न** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिडावा, 20. **महावीर स्कूल (नगर विभाग) ह्न** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, 21. **महावीर स्कूल (सी-स्कीम) ह्न** पण्डित जीवनजी शास्त्री, 22. **महावीर पब्लिक स्कूल ह्न** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री।

(शेष पृष्ठ 8 पर ....)

शिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण शिविर पत्रिका

समयसार का सार ७५

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इसके पहले भी कई गाथाएँ आई हैं, जिनमें इसी भाव को स्पष्ट किया है कि –

धर्मादि मेरे कुछ नहीं, मैं एक ज्ञायक भाव हूँ।
रागादि मेरे कुछ नहीं मैं एक ज्ञायक भाव हूँ।
मोहादि मेरे कुछ नहीं मैं एक ज्ञायक भाव हूँ।

इसी का नाम है भेदविज्ञान की भावना को नचाना अर्थात् उसी में मन को लगाना। पूर्वोक्त जो गाथाएँ कहीं, उनमें पहली में है– चेतना, दूसरी है देखना व तीसरी है जानना। तीनों में बात तो एक ही है, क्योंकि देखने और जानने को ही चेतना कहते हैं। चेतना नाम का एक गुण है, उसी के ज्ञान चेतना और दर्शन चेतना नामक दो भेद हैं। उपयोग जीव का लक्षण है, उसी के ये दो भेद हैं– ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग।

पहले ज्ञान-दर्शन को सामान्य रूप से कहा, फिर दर्शन को अलग कहा और ज्ञान को अलग कहा।

मैं इसप्रकार कहता हूँ कि आत्मा को देखना दर्शन है और आत्मा को जानना ज्ञान है। आत्मा को देखना दर्शन है और देखते रहना ध्यान है। आत्मा को जानना ज्ञान है और आत्मा को जानते रहना ध्यान है। आत्मा को देखना-जानना दर्शन-ज्ञान है और आत्मा को देखते-जानते रहना ध्यान है।

मैंने तीन बार कहा तो अंतर भी समझ में आया होगा। ये तीन नहीं हैं, ये तो एक चेतना का ही विस्तार है, क्योंकि हमें इस चेतना के भेदविज्ञान की भावना को विकल्पों में नचाना है। तो भेद डाले बिना आनंद नहीं आयेगा, इसलिए इतना भेद डालकर बात करते हैं। अन्दर में ये विकल्प टूट जाय। मैं तो चैतन्यमय ज्ञानानंद स्वभावी हूँ – यह जो भाषा में आ रहा है, वह भाषा में नहीं आए, विकल्प में भी नहीं आए, मात्र ज्ञान में रहे, बस। लब्धि और उपयोग में भी वही भेदविज्ञान की भावना कायम रहे।

यही सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र को करने का उपाय है। चौथे से पाँचवे गुणस्थान में जाने का भी यही उपाय है। छटवें-सातवें गुणस्थान में भी जाने का यही उपाय है। श्रेणी में जाने का भी उपाय यही है। यहाँतक कि केवलज्ञान होने का भी यही उपाय है, अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं है। मोक्ष में अनंत काल तक रहने का भी यही उपाय है।

इससे छुट्टी मिलने वाली नहीं है, अरे भाई! छुट्टी तो ऐसी चीज से ली जाती है, जो हमारे लिए भारभूत हो।

जिसको प्राप्त करने के लिए तुम इतना अनंत पुरुषार्थ कर रहे हो, क्या वह छुट्टी प्राप्त करने के लिए कर रहे हो?

विचार करो, मान लो यदि आप मेडिकल में साइंस के विद्वान अथवा डॉक्टर बनना चाहते हो और आपने इतनी मेहनत की, इतना पैसा खर्च किया और पढ़ाई पूरी करके गोल्ड मेडलिस्ट हुए। यह सब आपने भूल जाने के लिए तो न न? वहाँ तो मरते दम तक ज्ञान कायम रखना चाहते यहाँ पर छुट्टी की बात करते हो।

वह ज्ञान तो ऐसा है कि यदि पैसा कमाने का वि जाय तो उसकी फिर कोई जरूरत नहीं है। अरे भाई! तो भूल जाय, फिर भी हम भूलने के लिए नहीं पढ़ते

यहाँ तुम आत्मज्ञान से छुट्टी अर्थात् उसे भूलने कर रहे हो। अरे भाई! यह तो अनंत पुरुषार्थ से प्राप्त वस्तु है, इसे तो अनंत काल तक कायम रखना चाहि

श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र की जो निर्मल पर्यायें प्रगट हुई शुद्धदशा में अनंतकाल तक रहेंगी। छहढाला में भी क

रहिहैं अनंतानंत काल, यथा तथा शिव परिणवे

मुक्ति होते समय तुम जैसे परिणमित हुए, वैसे ही अ तक रहोगे।

मान लो आप मकान बेचकर, बहुत कोशिश करके लड़की की शादी किसी योग्यतम लड़के के साथ कर यदि वह लड़की कहे कि मेरे जिस लड़के के साथ सात रहे हैं, उसके साथ मुझे कितने दिन रहना पड़ेगा, उससे कब मिलेगी ?

तब आपको कैसा लगेगा ? आप यही कहेंगे – बेटी इस घर से तेरी डोली निकली है और अब उस घर से डोली निकलने का अवसर नहीं है, वहाँ से अब तुम्हारी अ निकलेगी। तब तक तुम्हें वहाँ ही रहना है। अगले भव में है या नहीं रहना है – तुम इसके बारे में सोच लेना। वैसे तो कहती थी कि नौ भव की लगी है और नौ भव तक और रहे। तुम ये कैसे कहती हो कि उसके साथ कितने दिन रहना पड़ेगा।

उसीप्रकार तेरे अन्दर यह बात कहाँ से आई कि प्र को सारे जगत से भेदकर त्रिकालीध्रुव भगवान आत्मा जाकर यह कहो कि इससे कब छुट्टी मिलेगी ? अभी तु प्रश्न मत करो कि कब तक रहना पड़ेगा, तुम एकबार इ कर लो, फिर यह प्रश्न करना, तब हम जबाब देंगे, क्योंकि हम जो जबाब देंगे, वह तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा।

जब तुम्हें इस आत्मा की प्राप्ति हो जायेगी, तब तु प्रश्न खड़ा ही नहीं होगा कि इसके साथ कब तक पड़ेगा? फिर तो तू यह कहेगा कि मुझे क्षायिक सम्य चाहिए, क्षयोपशम या उपशम सम्यग्दर्शन नहीं।

वह लड़की कहे कि मैं जिसके साथ शादी कर उसके साथ कितने साल रहना पड़ेगा ? पाँच साल बा तलाक मिल जायेगा कि नहीं? – यह प्रश्न तब समा जायेगा। जब शादी हो जायेगी और तू आराम से रहेगी तुझे ये डर लगेगा कि ये मेरे को कहीं तलाक न दे दें। इ अभी यह प्रश्न यहाँ खड़ा मत करना।

उसीप्रकार अज्ञान की भूमिका में तू यह निर्णय कैसे सकता है कि तुझे यहाँ कितने काल तक रहना है ?

ोई बेटा अपने बाप से कहे कि हम टोडरमल स्मारक में के लिए जा रहे हैं तो वहाँ कितने दिन रहना पड़ेगा, घर ो कब छुट्टी मिलेगी ? तो बाप कहता है कि बेटा अभी ाओ। अभी पाँच साल तो रहना ही है आगे का निर्णय ाल बाद करना।

ाधे से ज्यादा विद्यार्थी तो घर वापस जाते ही नहीं हैं। ापिस आने का निर्णय उस दिन करते, तो क्या होता ? ाँ-बाप से ऐसा कहते कि हम अनन्तकाल के लिए जा रहे अब दोबारा तुम्हारे पास आयेंगे ही नहीं, तो क्या माँ-बाप हीं भेजते।

माँ-बाप के साथ तुम्हारा साथ तो अनंतकाल के लिए छूट है, क्योंकि तुम बहुत धर्मात्मा बन जाओगे और वे इतने बने हैं, तो अगले भव में साथ कैसे रहने वाला है ? यदि तुम इतना धर्मात्मा बना लो तो बहुत बढ़िया बात है; पर वह अलग है।

आप इतने धर्मात्मा तो पाँच साल के अथक अध्ययन और ्त की मेहनत और यह देशना प्राप्त होने से बने हैं।

यह जादू का मंतर थोड़े ही है कि तुम अपने मम्मी पर, पर छोड़ दोगे, तो वे धर्मात्मा बन जायेंगे। यह कमाई थोड़े कि मैं अपनी एफ.डी. अपने नाम से पलट कर उसके नाम ा दूँ, या मकान की रजिस्ट्री उनके नाम करवा दूँ।

यह तो ज्ञान की रजिस्ट्री है; यह थोड़े ही इसप्रकार है।

उनके और तुम्हारे रास्ते तो बदल जाने वाले हैं, रास्ते तो में रहनेवाले हैं नहीं; क्योंकि यह मार्ग लौकिक मार्ग तो है यह तो अलौकिक मार्ग है।

एक भाई मेडीकल लाईन में चला गया। एक भाई इंजीनियर गया और एक धर्म पढ़ने यहाँ आ गया। अब ऐसा कहो कि सब साथ में रहेंगे तो यह बात सही नहीं है।

इंजीनियर को तो किसी जंगल में रहना पड़ेगा। मान लो बाँध बनना है तो बाँध तो जंगल में बनता है, तो उसे जंगल ्हना पड़ेगा। बाँध बन जाने के बाद यद्यपि वहाँ मंगल हो ा है, वह स्थान एक नगर बन जाता है, वहाँ नल, बिजली, आदि सभी की सुविधा हो जाती है; लेकिन उस इंजीनियर दूसरा बाँध बनवाने के लिए फिर वनवास हो जाता है; ्रकार वह तो जीवनभर वनवासी ही रहेगा।

दूसरा भाई जो डॉक्टर है सुबह से शाम तक बीमारों के में रहेगा, रोगियों को ही देखता रहेगा और तीसरे तुम कहीं ालीध्रुव भगवान आत्मा के गीत गा रहे होगे।

तुम्हारा और उनका किसीप्रकार भी साथ संभव नहीं है; ्कि उनका तो लौकिक मार्ग है और तुम्हारा अलौकिक।

ये जो पर को छोड़ने की बात है; पर से भेदविज्ञान की बात यह अनंतकाल तक के लिए छूटने की बात है। उस समय ्ने की बात नहीं है; क्योंकि यह उस समय कह दोगे तो उस समय भी नहीं छूट पाओगे।

इसप्रकार इन चार गाथाओं में आचार्य कहते हैं कि भावनाओं को नचाते-नचाते जब भावना इतनी सबल हो जाए कि संसार में रहने की भावना से ही मुक्त हो जाय; तब समझ लो कि तुम्हारा मोक्ष हो गया।

यदि किसी को संसार में रहने की भावना हो, लौटकर वापिस आने की भावना हो तो उसकी स्थिति वास्तव में वैसी ही है; जैसी उस भिखारी की कि थी कि जिसको राजा बना दिया गया था –

पुराने जमाने में जब किसी राजा का कोई उत्तराधिकारी नहीं होता था और वह राजा किसी बच्चे को गोद लिए बिना ही मर जाता था; तब राजा बनाने के लिए उसके हाथी को भेजा जाता था और वह जिसको बैठाकर लाता था, उसे ही राजा बना दिया जाता था।

वह हाथी गया और एक भिखारी को बैठाकर ले आया। लोगों ने कहा कि यह नहीं चलेगा। हाथी भूल गया है, उसे दुबारा भेजो। हाथी फिर से उसी को बिठा लाया। तब लोगों ने कहा कि इसको कहीं छिपा देते हैं, फिर हाथी भेजते हैं, लेकिन वह हाथी उसी को खोजकर लाता है। तब लोग कहते हैं कि अब तो इसे राजा बनाना ही पड़ेगा और उसे राजा बनाने की तैयारी करने लगते हैं।

ऐसा जानकर वह भिखारी अपने फटे-पुराने कपड़े समेटने लगा तो लोगों ने कहा कि ये तुम क्या कर रहे हो, इन कपड़ों को पहनकर तुम सिंहासन पर बैठोगे? वहाँ तुम्हारे लिए नये-नये बहुत बढ़िया कपड़े तैयार हैं। तुम्हें वहाँ नहा-धोकर एकदम तैयार करके बिठाया जायेगा।

वह भिखारी कहता है कि ऐसा है तो कोई बात नहीं; पर कम से कम इन्हें संभालकर तो रख लेने दो; क्योंकि मैं जब लौटकर जाऊँगा, तब तो फिर काम आयेंगे, तब मैं क्या पहनूँगा?

उस भिखारी को यह पता नहीं कि वह क्या बन रहा है ? क्योंकि उसका अभी भी लौटकर आने का विचार है।

वह भिखारी कहे कि वहाँ मन नहीं लगा तो ? अरे भाई! उसका ऐसा विकल्प भी अपशुकन का विकल्प है, क्या उसे ऐसा विकल्प आना चाहिए ? यदि उसे ऐसा विकल्प आए तो समझ लेना वह क्या है ?

इसीप्रकार तुम सब भी इन गुदड़ियों से निकलकर सम्राट चक्रवर्ती बनने जा रहे हो ? जो भी इस अध्यात्म के क्षेत्र में आए हैं, वे सभी भगवान बनने के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है।

आचार्य कह रहे हैं कि यह मोक्ष अधिकार है और मोक्ष अधिकार में मोक्ष की ही बात होगी।

प्रवचनसार की २०० वीं गाथा में कहा है कि तुम उस भेदविज्ञान की भावनाओं को तीव्रता से नचाओ, इसी से मोक्ष प्राप्त होगा और किसी से नहीं। यही मार्ग है, अन्य कोई मार्ग नहीं।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) 5

शिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण शिविर पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

(पृष्ठ 1 का शेष)

बड़ौत (उ.प्र.): यहाँ मुमुक्षु मण्डल बड़ौत के विशेष आग्रह पर पर्यूषण के चार दिन पूर्व से ही ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन की सामान्य कक्षा ली गई। तथा पर्व के दिनों में प्रात: जिनधर्म प्रवेशिका पर, दोपहर में कर्मो की दश अवस्थाओं पर तथा रात्रि में दशधर्म एवं छहढाला पर प्रवचन हुआ।

ज्ञातव्य है कि रात्रि का प्रथम प्रवचन पण्डित सुरेश काले शास्त्री का होता था। उनके ही द्वारा पूजन-विधान एवं सांस्कृतिक कराये गये।

भोपाल (म.प्र.) यहाँ चौक धर्मशाला में जयपुर निवासी पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रातः समयसार के सर्व विशुद्ध ज्ञान अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुए। तत्पश्चात् आपके द्वारा ही प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के प्रत्येक अध्याय का अर्थ किया गया। दोपहर में आपके द्वारा तीन लोक के अकृत्रिम जिन चैत्यालयों तथा पंच परावर्तन की विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। रात्रि में दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए। प्रतिदिन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, खरगापुर द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। समस्त कार्यक्रमों से समाज में महती धर्म प्रभावना हुई। **– देवेन्द्र बड़कुल**

उदयपुर (राज.) : यहाँ सैक्ट-3, नेमिनगर में पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री गुढा द्वारा प्रतिदिन प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन तथा सायंकाल बालकक्षा एवं छहढाला पर कक्षा के अतिरिक्त दशलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन किये गये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। सम्पूर्ण आयोजन में महाविद्यालय के ही स्नातक श्री सुरेशजी अखावत का अपूर्व सहयोग रहा।

किशनगढ (राज.) : यहाँ पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री सिंगोड़ी द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा तथा सायंकाल बालकक्षा के उपरान्त दसलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

शोक-संदेश

इन्दौर मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता, परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर के महामंत्री, अध्यात्मप्रेमी श्री मांगीलालजी पहाड़िया का अचानक देहावसान हो गया है। आप बहुत समय से अस्वस्थ चल रहे थे। आप बहुत ही धार्मिक एवं सरलस्वभावी व्यक्ति थे। पण्डित टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित समस्त गतिविधियों में आप सदैव तन-मन-धन से समर्पित भाव से भाग लेते रहे हैं। इन्दौर प्रशिक्षण-शिविर एवं पंचकल्याणक में आपकी अहम भूमिका रही। आपके स्वर्गवास से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो – यही कामना है।

क्षमावाणी समारोह में महामहिम राज्यपाल

जयपुर : श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग द्वारा आयोजित सामूहिक क्षमापना पर्व समारोह में **राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री निर्मलचन्दजी जैन** ने मुख्य-अतिथि के रूप में सभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि क्षमा मन से मांगनी चाहिये, इसलिये मन में करुणा जरूरी है। मानवता करुणा से आती है। हमें व्यवहार में आध्यात्मिकता लाकर प्रपंचों से ऊपर उठने का प्रयास करना चाहिये।

बायें से महेन्द्रकुमारजी पाटनी, विवेकजी काला, महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्दजी जैन एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल

समारोह के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का इस अवसर पर क्षमावाणी पर मार्मिक प्रवचन हुआ जिसका लाभ भी सभी को मिला।

इस अवसर पर बापूनगर दिग. जैन समाज के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने बापूनगर सम्भाग की गतिविधियों का परिचय दिया। कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्यपाल के कर-कमलों से दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग परिचय पुस्तिका का विमोचन एवं पर्व में 3 से 10 उपवास करनेवाले साधर्मियों का सम्मान किया गया।

प्रसिद्ध रत्नव्यवसायी श्री विवेक काला ने भी सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री सम्पतकुमारजी गधइया भी मंचासीन थे।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) सितम्बर (द्वितीय) 2003
J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127